बाढ़ में कुआं बना आश्रय स्थल

सुपौल जिलान्तर्गत सुपौल प्रखंड का बलबा पंचायत दोनो तटबंध के बीच बसा हुआ है। इस पंचायत से होकर कोषी नदी की दो धाराएँ बहती है। इस पंचायत में आठ राजस्व गांव है, जिसमें पिपराहरि भी एक राजस्व गांव है। यहां का कुछ भाग बांध के (पूरब) बगल में बसा है। यहां के लोगों की मुख्य पेषा कृषि व पषुपालन है। यह गांव लगभग दो सौ साल पुराना है। यहां के लोग बीते हुए कल की यानि करीब 200 साल पूर्व की बातें को बहुत ही रोचक ढ़ंग से कहते हैं। पिपराहरि गांव में एक जीर्ण–षीर्ण हालत में लगभग दो सौ साल पुराना कुआं है। जबसे चापाकल का चलन हुआ है तबसे कुआं मृतप्राय हो गया था।

पिछले करीब पांच सालों से मेघ पाईन अभियान के तहत ग्राम्यषील द्वारा जल मुद्दे पर कार्य किये जा रहे हैं। इसी क्रम में अभियान कार्यकर्ता की नजर तटबंध के बीच अवस्थित कुएं पर पड़ी। यह कुआं पिपराहरि गांव के करीब 70 वर्षीय श्री षिवनाथ बाबा का है। बाबा इसे अपने पूर्वजों का धरोहर मानते हैं। वे इस कुआं की कथा कहते नहीं थकते। षिवनाथ बाबा संत प्रवृति होने के बाबजूद इस कुएं के प्रति उनका अगाध मोह है। जब मेघ पाईन अभियान, सुपौल के कार्यकर्ताओं ने बाबा के समक्ष कुआं की जिर्णोद्धार का प्रसंग छेड़ा तो बाबा की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने श्जो कल करे सो आज कर ले की तरह तत्पर हो उठे उन्होने दूसरे ही दिन ग्रामीणों की बैठक रखी। सर्वसम्मति से कुआं के जिर्णोद्धार में सहयोग का निर्णय लिया गया, और निर्णयानुसार कुआं बनकर भी तैयार हो गया।

कोषी त्रासदी 2008 के उपरान्त कोशी तटबंध के उंचीकरण और पक्कीकरण को कार्यरुप देनें का कार्य सरकार द्वारा तेजी से किया जा रहा है। पुराने तटबंध को करीब 05–06 फीट उंचा किया जा रहा है। कोषी तटबंध निर्माण के उपरांत दोनो तटबंध के बीच कमो वेष बाढ आना सुनिष्चित है। ग्रामीणों के कथनानुसार 1968 में बाढ का दृष्य भयावह था, लेकिन 2010 की बाढ ने पूर्व के सभी रिकार्ड को तोड़ दिया। सभी सुरझा बांध (स्पर) डूब गये। लेगों की मान्यता के विरुद्ध जिस गांव में पानी अबतक नहीं गया था उस गांव का भी पानी में डूब जाना तटबंध के बीच के लोगों के लिये आष्चर्यजनक था। तटबंध के भीतर तबाही ही तबाही, एक भी ऐसा घर नहीं जहां लोग सुरक्षित रह सके। मनुष्य, पषु अर्थात सारा जीवन अस्तव्यस्त और बचाव के नाम पर शून्य की स्थिति। राहत कार्य में सरकार द्वारा मात्र 100 किलो अनाज व 250 रुपये। तबाही और हतास जीवन के आलावा तटबंध के भीतर कुछ नहीं...!

बलबा पंचायत का सुकैला गांव पूर्णतया कोषी के पेट में चला गया। कर्णपट्टी गांव का करीब 75 प्रतिषत भाग वर्वाद हो गया। नरहैया गांव का करीब आधा हिस्सा कोषी की

चपेट में आ जाना किसी ने नहीं सोचा होगा। इतना ही नहीं लालगंज टोला जो सबसे उंचा व सुरक्षित माना जा रहा था उसके भी सब घर में पानी ही पानी। तटबंध से सटे हुए पिपराहरि गांव के आंषिक टोले में बाढ का भयावह दृष्य और पानी की तेज धारा को देखकर सबका दिल सिहर जाता था। मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्ता भी इस भयावह स्थिति में लोगों के दुख दर्द में कमी लाने में असमर्थ रहे। यदि कोषी बराज से पानी और छोड़ा जाता अथवा भारी वर्षा होती तो तटबंध के उपर से बाढ का पानी बह जाता, इसलिये सुपौल जिला प्रषासन भी मुस्तैद था।

बाढ की विभिषिका को देख कर तटबंध के भीतर का सारा गांव लोगों से खाली था। विनाष लीला को देखकर भी षिवनाथ बाबा अपना घर–द्वार छोड़ कर नहीं निकले धीरे–धीरे घर आंगन में रहना उनके लिये मुष्किल हो गया। तब बाबा ने मेघ पाईन अभियान द्वारा जिर्णोद्धार किये गए कुएं को अपना आश्रय स्थल बनाया। ध्यातव्य हो कि इस बाढ में कुआं के चबूतरे पर तो पानी था लेकिन कुआं के उपर से कभी भी पानी नहीं वहा। ष्विनाथ बाबा ने उसी के उपर मचान डालकर रहना आरंभ किया। लगातार तीन दिनों तक बाबा उसी मचान पर रहे। पानी घटने के बाद बाबा नें कुआं के चबूतरा पर खाना बनाकर खाया। यह मुसीबत भरे समय में बाबा ने कुआं पर अपना 17 दिन गुजारा। इस प्रसंग पर षिवनाथ बाबा भावुक हो जाते हैं और अपने पूर्वज के बनाए कुआं को जीवन रक्षा का माध्यम मानते हैं